शरद व बसन्तकालीन गन्ने में अन्तः फसल की खेती

उत्तरी भारत में गन्ना शरद (अक्टूबर) एवं बसन्त ऋतु (फरवरी-मार्च) एवं गर्म ऋतु में बोया जाता है। शरद एवं बसन्तकालीन गन्ने के साथ दो कतारों के बीच की जगह लम्बे समय तक खाली पड़ी रहती है। इस खाली जगह में खरपतवार उगते हैं जो गन्ने की प्रारम्भिक अवस्था में फसल को हानि पहुंचाते हैं। इन खरपतवारों की रोकथाम के लिए किसानों को गुड़ाई करनी पड़ती है। दूसरे कुछ किसानों के पास जमीन कम होती है। उनको अन्य फसले भी लेनी पड़ती हैं। परीक्षणों से पता चला है कि गन्ने के साथ अन्य फसले भी ली जा सकती हैं। इस विधि द्वारा किसान को अतिरिक्त आमदनी भी हो जाती है तथा खरपतवार का नियंत्रण भी हो जाता है।

शरदकालीन गन्ने के साथ निम्नलिखित फसलें उगाई जा सकती हैं

आलू	-	गन्ना	लहसुन	-	गन्ना
टमाटर	-	गन्ना	अलसी	-	गन्ना
फूलगोभी	-	गन्ना	सरसों	-	गन्ना
पत्तागोभी	-	गन्ना	गेहूँ	-	गन्ना
धनिया	-	गन्ना	मटर	-	गन्ना
प्याज	-	गन्ना	चना	-	गन्ना

चित्र (६)

चित्र (७)

चित्र (८)

चित्र (९)

चित्र (१०)

इसके अतिरिक्त अन्य शरदकालीन सब्जी की फसले भी ले सकते हैं। इसके लिए अतिरिक्त खाद की मात्रा का प्रयोग फसलों के अनुसार करना चाहिए।

बसन्तकालीन गन्ने में कम समय में पकने वाली दलहनी एवं सब्जी की फसलें उगाई जा सकती हैं।

निम्नलिखित फसलें गन्ने के साथ बसन्तकालीन गन्ने में आराम से उगाकर अतिरिक्त आय किसान भाई कर सकते हैं।

मूंग – गन्ना

उड़द – गन्ना

लोबिया – गन्ना

राजमा – गन्ना

भिण्डी – गन्ना

निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है :-

१. गन्ने की दो लाईनों के बीच अंत: फसल की निर्धारित लाईने ही बोये। जैसे भिण्डी, लोबिया की एक लाईन, उड़द, मूंग की दो लाईने। अन्य फसलों की लाईने भी बीच की दूरी के अनुसार ही लगायें।

२. अंत: फसल के समय-समय पर निराई-गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए।

३. आवश्यक उर्वरक जो प्रयोग करना हो सही समय पर प्रयोग करें।

४. अंत: फसल की कटाई के तुरंत बाद गन्ने में सिंचाई व उर्वरक प्रयोग उपरान्त गुड़ाई कर देना चाहिए।